6

छात्र दैनन्दिनी

नाम अक्षत कृष्णा

कक्षा एकादश 'ख'

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

कानपुर– २०८००२

दूरवाणी : (०५१२) २५६२७६६

Scanned by CamScanner

सूर्य नमस्कार मंत्र

1. ॐ मित्राय नमः।
2. ॐ रवये नमः।
3. ॐ सूर्याय नमः।
4. ॐ भानवे नमः।
5. ॐ खगाय नमः।
6. ॐ पूष्णे नमः
7. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः।
8. ॐ मरीचये नमः।
9. ॐ आदित्याय नमः।
10. ॐ सवित्रे नमः।
11. ॐ अर्काय नमः।
12. ॐ भास्कराय नमः।
13. ॐ सवितृ श्री सूर्य नारायणाय नमः।

ध्येयः सदा सवितृ-मण्डल-मध्यवर्ती,
नारायणः सरसिजासन-सन्निविष्टः।
केयूरवान् मकर-कुण्डलवान् किरीटी,
हारी हिरण्यमयवपुर्धृत-शंख-चक्रः।।

गायत्री-मंत्र

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।।

(हम सविता देव के वरणीय तेज को धारण करते हैं। वह हमारी बुद्धि को प्रेरित करें।)

Scanned by CamScanner

स्मरणीय

भारत हमारा देश है, हम सब भारत वासी एक ही कुटुम्ब के सहोदर हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी अधिक प्यारा है। हमें अपनी समृद्ध संस्कृति पर गर्व है। हम इसके सुयोग्य नागरिक बनेंगे। हम अपने माता-पिता और गुरुजनों का आदर करेंगे। सबके साथ मर्यादित और उचित व्यवहार करेंगे। हम अपने राष्ट्र के प्रति प्रामाणिक रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। अपने राष्ट्र के कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

(१) लक्ष्य..

(२) अभिरुचि ....

(३) सर्वाधिक प्रिय विषय ....

(४) अरुचिकर विषय ....

छात्र का हस्ताक्षर ....

दिनांक ....

Scanned by CamScanner

अभिभावक/संरक्षक के हस्ताक्षर

जब कभी विद्यालय द्वारा अभिभावक या संरक्षक के हस्ताक्षर की आवश्यकता पड़े, निम्नलिखित तीन सज्जनों में से कोई भी एक हस्ताक्षर करने की कृपा करें। इनके अतिरिक्त अन्य कोई भी हस्ताक्षर मान्य नहीं होंगे।

नाम	सम्बन्ध	हस्ताक्षर
	पिता	
	माता	
	अभिभावक (छात्र से सम्बन्ध)	

विद्यालय में पढ़ने वाले सहोदरों के नाम तथा कक्षा

१ अभिजय कृष्णा .... सप्तम 'ग' ....

२ ....

३ ....

Scanned by CamScanner

अभिभावक बन्धुओं को कुछ सुझाव

१. बालक विद्यालय में भारतीय संस्कृति के वातावरण में रहता है, अतएव घर का वातावरण भी तदनुसार ही हो, जिससे पारिवारिक तथा विद्यालयीय वातावरण की एकरूपता छात्र के विकास में सहायक हो सके।

२. बालक में सत्य, धैर्य, आत्म-विश्वास, श्रम-निष्ठा एवं सेवा-भाव जैसी प्रवृत्तियों का विकास हो सके, इसके लिए आप उसे प्रोत्साहन एवं प्रेरणा प्रदान करते रहें।

३. आत्म-विश्वास, स्वालम्बन एवं निर्भीकता व्यक्तित्व के समुचित विकास के मौलिक तत्त्व हैं, अतएव बालक में इनका विकास होने देना चाहिए।

४. बालक की जिज्ञासाओं का समाधान करने का प्रयास होना चाहिए। इसके लिए उसके द्वारा पूछे गये प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर देने चाहिए। अधिक प्रश्न करने पर उसे डाँटना कदापि उचित नहीं।

५. बालक को उपलब्धियों पर प्रोत्साहन दीजिए, उपलब्धि चाहे छोटी ही क्यों न हो इससे उसकी क्षमता बढ़ती है।

६. बालक द्वारा किसी प्रकार की त्रुटि हो जाने पर उसे धैर्यपूर्वक समझाइए तथा प्रयास करिए कि वह अपनी त्रुटि का अनुभव कर ले और उसकी मनः स्थिति पुनः उस त्रुटि को न करने के लिए बन जाये।

७. बालक परिवार व विद्यालय के साथ धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों का वहन भी कर सकें, ऐसी अभिरुचि जाग्रत करने का प्रयास करना चाहिए।

Scanned by CamScanner

अभिभावक महानुभावों से अपेक्षाएँ

१. छात्र के सम्बन्ध में विद्यालय से सूचना प्राप्त होने पर तदनुसार कार्यवाही करने का प्रयास करें।

२. छात्र का प्रतिदिन विद्यालय-वेश में आना अनिवार्य है, अतएव इस ओर वर्ष भर प्रयत्नशील रहना चाहिए।

३. छात्र के हित में यह आवश्यक है कि आपके द्वारा प्रतिदिन छात्र-दैनन्दिनी का निरीक्षण किया जाये, साथ ही हमें प्रयास करना चाहिए कि छात्र अपने अध्ययन अध्ययनेतर कार्यों तथा दैनन्दिनी में उल्लिखित बातों में एकरूपता बनाए रखे।

४. किसी प्रकार की कठिनाई होने पर आप विद्यालय से यथाशीघ्र सम्पर्क स्थापित करने का कष्ट करें।

५. यदि आप किसी आचार्य से सम्पर्क करना चाहते हैं, तो इसके लिए पहले से समय निर्धारित कर लें और तदनुसार ही विद्यालय पधारें। अपनी सुविधानुसार सम्पर्क न करें।

६. यदि छात्र विद्यालय विलम्ब से पहुँचता है विद्यालय-वेश पहनकर नहीं आता है या समय से पूर्व अवकाश चाहता है, तो इसके लिए आपका उपयुक्त प्रार्थना-पत्र होना आवश्यक है।

७. प्रत्येक मास की अन्तिम तिथि को अपराह्न ३ बजे से ४ बजे के मध्य आपका विद्यालय में उपस्थित होना छात्र के विकास में सहायता करेगा।

८. आपके पते तथा दूरवाणी क्रमांक में यदि किसी प्रकार का परिवर्तन होता है, तो तत्सम्बन्धी सूचना विद्यालय को अवश्य प्रेषित करनी चाहिए।

९. यदि आप छात्र के शारीरिक स्वास्थ्य या आन्तरिक प्रवृत्तियों में किसी भी प्रकार की न्यूनता का अनुभव करते हैं, तो इसकी सूचना विद्यालय को अवश्य प्रेषित करें।

Scanned by CamScanner

१०. छात्र की दिनचर्या का परिचय आवश्यकतानुसार कक्षाध्यापक को कराते रहना चाहिए।

११. यदि छात्र अवकाश चाहता है तो इसकी अनुमति विद्यालय से अवश्य लेनी चाहिए। बिना अनुमति के अनुपस्थित रहना किसी भी दृष्टि से न तो उचित है और न ही हितकर।

१२. विद्यालय की प्रथम घण्टी बजने के पाँच मिनट पूर्व छात्र को विद्यालय पहुँच जाना चाहिए।

१३. छात्र के पास अनावश्यक शौक उत्पन्न करने वाली वस्तुएँ कदापि न रहनी चाहिए। अनावश्यक पैसे भी न दें।

◆◆◆◆◆

Scanned by CamScanner

पथ का अंतिम लक्ष्य नहीं है

पथ का अंतिम लक्ष्य नहीं है, सिंहासन चढ़ते जाना।
सब समाज को लिये साथ में, आगे है बढ़ते जाना।।

इतना आगे इतना आगे जिसका कोई छोर नहीं
जहाँ पूर्णता मर्यादा हो, सीमाओं की डोर नहीं,
सभी दिशाएं मिल जाती हैं, उस अनंत नभ को पाना।।१।।

छोटे-मोटे फल को पाना, यह न परिश्रम सारा है
देवों को भी दुर्लभ है, जो ऐसा राष्ट्र हमारा है
सकल राष्ट्र अनुपम वैभव, सभी भाँति से है लाना।।२।।

वैभव तब ही सच्चा समझें, जब सुख पाये लोक सभी,
बाधाओं भय कुंठाओं से, मुक्त सभी गत शोक सभी
गुरु की पूजा न्याय व्यवस्था, अखिल विश्व में सरसाना।।३।।

इस महान उद्देश्य प्राप्ति हित, लगे भले जीवन सारा,
एक जन्म बार-बार हो इसी हेतु जीवन धारा,
जियें इसी हित और मृत्यु को इसी हेतु है अपनाना।।४।।

Scanned by CamScanner

वह जीवन भी क्या जीवन है

वह जीवन भी क्या जीवन है, जो काम देश के आ न सका
वह चन्दन भी क्या चन्दन है, जो अपना वन महका न सका
जिसकी धरती पर जन्म लिया, जिसके समीर से साँस चली
जिसके अमृत से प्यास बुझी, जिसकी माटी से देह पली
वह क्या सपूत जो मातृभूमि के, प्रति कर्तव्य निभा न सका
वह जीवन भी क्या जीवन है, जो काम देश के आ न सका।।१।।

मुनिवर दधीच हो गये अमर जिनकी अस्थि से वज्र बना
संकट समाज का दूर किया देकर पावन जीवन अपना
वह मानव क्या जो जनहित में निज प्राण-प्रसून चढ़ा न सका
वह चन्दन भी क्या चन्दन है, जो अपना वन महका न सका।।२।।

राणा का जीवन, जीवन था जिसने महलों को छोड़ दिया
रोटियाँ घास की खा वन में आजादी का संघर्ष किया
वह देशप्रेम क्या देशप्रेम जो कंटक पथ अपना न सका
वह जीवन भी क्या जीवन है जो काम देश के आ न सका
वह चन्दन भी क्या चन्दन है, जो अपना वन महका न सका।।३।।

Scanned by CamScanner

लक्ष्य तक पहुँचे बिना

लक्ष्य तक पहुँचे बिना पथ में पथिक विश्राम कैसा,
लक्ष्य है अति दूर दुर्गम मार्ग भी हम जानते हैं,
किन्तु पथ के कंटकों को हम सुमन ही मानते हैं,
जब प्रगति का नाम जीव, यह अकाल विराम कैसा।।१।।

धनुष से जो छूटता है बाण कब राह में ठहरता
देखते ही देखते वह लक्ष्य का ही वेध करता
लभ्य प्रेरित बाण है हम, ठहरने का काम कैसा ।।२।।

बस वही है पथिक जो पथ पर निरन्तर अग्रसर हो,
हो सदा गतिशील जिनका लक्ष्य प्रतिक्षण निकटतर हो।
हार बैठे जो डगर में पथिक उसका नाम कैसा ।।३।।

बाल रवि की स्वर्ण किरणें निमिष में भू पर पहुँचती,
कालिमा का नाश करतीं, ज्योति जगमग जगत धरती,
ज्योति के तुम पुंज फिर हमको अमा से भीति कैसा ।।४।।

आज जो अति ही निकट है देख लो वह लक्ष्य अपना,
पग बढ़ाते ही चलो बस शीघ्र होगा सत्य सपना,
धर्म पथ के पथिक को, फिर देव दक्षिण वाम कैसा।।५।।

Scanned by CamScanner

न हो साथ कोई

न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम,
सफलता तुम्हारे चरण चूम लेगी।

सदा जो जगाये बिना ही जगा है,
अँधेरा उसे देखकर ही भगा है।

वही बीज पनपा पनपना जिसे था,
घुना क्या किसी के उगाये उगा है।

अगर उग सको तो उगो सूर्य से तुम,
प्रखरता तुम्हारे चरण चूम लेगी।

सही राह को छोड़कर जो मुड़े,
वही देखकर दूसरों को कुढ़े है।

बिना पंख तौले उड़े जो गगन में,
न सम्बन्ध उनके गगन से जुड़े हैं।

अगर बन सको तो पखेरू बनो तुम,
प्रवरता तुम्हारे चरण चूम लेगी।

न जो व्यर्थ की आँधियों से लड़े हैं,
कभी पग न उनके शिखर पर पड़े हैं।

जिन्हें लक्ष्य से कम अधिक प्यार खुद से,
वही जी चुराकर तरसते खड़े हैं।

अगर जी सको तो जियो जूझकर तुम,
अमरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ।।

Scanned by CamScanner

आँधी क्या है तूफान मिलें

आँधी क्या है तूफान मिलें, चाहे जितने व्यवधान मिलें,
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ना ही अपना काम है।।

हम नई चेतना की धारा, हम अँधियारे में उजियारा,
हम उस बयार के झोंके हैं, जो ले जग का दुःख सारा,
चलना है शूल मिलें तो क्या, पथ में अंगार जलें तो क्या,
जीवन में कहाँ विराम है, बढ़ना ही अपना काम है।।१।।

हम अनुगामी उन पाँवों के आदर्श लिए जो बढ़े चलें,
बाधाएँ जिन्हें डिगा न सकीं, जो संघर्षों में अड़े रहे,
सिर पर मंडराता काल रहे, करवट लेता भूचाल रहे,
पर अमिट हमारा नाम है, बढ़ना ही अपना काम है।।२।।

वह देखो पास खड़ी मंजिल, इंगित से हमें बुलाती है,
साहस से बढ़ने वालों के माथे पर तिलक लगाती है,
साधना न व्यर्थ कभी जाती, चलकर ही मंजिल मिल पाती,
फिर क्या बदली क्या घाम है, बढ़ना ही अपना काम है।।३।।

Scanned by CamScanner

लक्ष्य न ओझल होने पाए

लक्ष्य न ओझल होने पाए कदम मिलाकर चल,
मंजिल तेरे पग चूमेगी आज नहीं तो कल ।।

सबकी दौलत, सबकी मेहनत, सबकी हिम्मत एक,
सबकी ताकत, सबकी इज्जत, सबकी किस्मत एक,
शूल बिछे अगणित राहों में, राह बनाता चल।।१।।

छोड़ किनारा कूद पड़ो मझधार तुम्हारा डेरा,
खून पसीना बहा के अपना, ला फिर नया सवेरा,
सीमाओं पर आज मचलता देशभक्ति का बल।।२।।

नूतन वेदी बलिदानों की, माँगे आज जवानी,
देनी होगी हम सबको अब, देश हेतु कुर्बानी।
बलिदानों का ढेर लगा इतिहास बनाता चल।।३।।

Scanned by CamScanner

तेरी गोदी में जो सुख है माँ

तेरी गोदी में जो सुख है माँ,
सारे जग में कहीं नहीं ।
आकर्षित कर सकते हमको,
ये चाँद-सितारे कहीं नहीं ।।
तेरी सेवा में रत होकर
काँटो का पथ भी प्यारा ।।
कस्तूरी बन बसी हृदय में,
रखो ज्ञान का उजियारा ।।
झूठे जग की मृग तृष्णायें,
बुद्धि बिसारें कहीं नहीं ।।१।।
तेरी गोदी में ....

तेरे पथ की धूल तप्त भी,
अमृत घट सी शीतल है।
सागर के लहरों की छाती
ध्येय मार्ग का सम्बल है।
तेरा क्षितिज असीम निरन्तर
लगे किनारे कहीं नहीं ।।२।।
तेरी गोदी में ....

अपने में विश्वास रखे माँ,
अविचल श्रद्धा का वर दो।
प्रभु का पायें अभय हस्त हम,
शील-शौर्य-सिंचित कर दो।
तेरे सुत तेरे अनुचर माँ,
हाथ पसारें कहीं नहीं ।।३।।
तेरी गोदी में ....

अजेय बल दो, युक्ति बुद्धि दो
दूरदर्शिता का शुभ दर्शन
कौशल दो व्यवहार-मार्ग में,
धैर्य शौर्य उत्साह चिंरतन
वैभव की चोटी तक निष्ठा,
पथ में हारे कहीं नहीं ।।४।।
तेरी गोदी में ....

Scanned by CamScanner

देश हमें देता है सब कुछ

देश हमें देता है सब कुछ
हम भी तो कुछ देना सीखें।

सूरज हमें रोशनी देता,
हवा नया जीवन देती है,
भूख मिटाने को हम सबकी,
धरती पर होती खेती है,
औरों का भी हित हो जिसमें,
हम ऐसा कुछ करना सीखें।।१।।

पथिकों को तपती दुपहर में,
पेड़ सदा देते हैं छाया,
सुमन सुगंध सदा देते हैं,
हम सबको फूलों की माला,
त्यागी तरुओं के जीवन से,
हम परहित कुछ करना सीखें।।२।।

जो अनपढ़ हैं उन्हें पढ़ायें,
जो चुप हैं उनको वाणी दें,
पिछड़ गये जो उन्हें बढ़ायें,
प्यासी धरती को पानी दें,
हम मेहनत के दीप जलाकर,
नया उजाला करना सीखें।।३।।

Scanned by CamScanner

देश का, युग का, तुम्हीं पर ध्यान है

देश का युग का, तुम्ही पर ध्यान है।
तरुण तेरे तेज का आह्वान है।।
वंदना करता सतत् इतिहास है।
संगठन में ही विजय विश्वास है।
अटल दृढ़ता, क्रांति का उल्लास है।
मृत्यु में नव सृजन का मधुमास है।
चपल चरणों में भरा उत्थान है।।१।।
तरुण तेरे ....

पर्वतों पर चढ़ चला तू धर्म ले,
जान्हवी लाया भगीरथ-कर्म ले।
चक्रव्यूह को सदा है तोड़ता
प्राण में अभिमन्यु साहस मर्म ले।
देश का कण-कण सुनाता गान है।।२।।
तरुण तेरे ....

आज संकट की घड़ी ललकारती,
त्रस्त फिर है आज भारत-भारती।
स्वार्थ-परता ग्रस्त शासन अन्ध है,
द्रोपदी रोती खड़ी मन हारती।
चीर खींचे जा रहा अभिमान है।।३।।
तरुण तेरे ....

छोड़ कर उठ व्यक्ति-वादी कल्पना,
तोड़ कर उठ संकुचित दल-भावना।
राष्ट्र के व्यापक महा विस्तार में,
जोड़ दे निज व्यष्टि की तप साधना,
मोह रजनी का हुआ अवसान है।।४।।
तरुण तेरे ....

Scanned by CamScanner

एकात्मतास्त्रोत्रम्

ॐ नमः सच्चिदानन्दरूपाय परमात्मने ।
ज्योतिर्मयस्वरूपाय विश्वमांगल्यमूर्तये ।।१।।

प्रकृतिः पंच भूतानि ग्रहालोकास्वरास्तथा ।
दिशः कालश्च सर्वेषां सदा कुर्वन्तु मंगलम् ।।२।।

रत्नाकराधौतपदां हिमालयकिरीटिनीम् ।
ब्रह्मराजर्षिरत्नाढ्यां वन्दे भारतमातरम् ।।३।।

महेन्द्रो मलयः सह्यो देवतात्मा हिमालयः ।
ध्येयो रैवतको विंध्यो गिरिश्चारावलिस्तथा ।।४।।

गंगा सरस्वती सिन्धुर्ब्रह्मपुत्रश्च गण्डकी ।
कावेरी यमुना रेवा कृष्णा गोदा महानदी ।।५।।

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवंतिका ।
वैशाली द्वारिका ध्येया पुरी तक्षशिला गया ।।६।।

प्रयागः पाटलिपुत्रं विजयानगरं महत् ।
इन्द्रप्रस्थं सोमनाथः तथाऽमृतसरः प्रियम् ।।७।।

चतुर्वेदाः पुराणानि सर्वोपनिषदस्तथा ।
रामायणं भारतं च गीता षड्दर्शनानि च ।।८।।

जैनागमास्त्रिपिटका गुरुग्रंथः सतां गिरः ।
एषा ज्ञाननिधिः श्रेष्ठा श्रद्धेयो हृदि सर्वदा ।।९।।

अरुन्धत्यनुसूया च सावित्री जानकी सती ।
द्रौपदी कण्णगी गार्गी मीरा दुर्गावती तथा ।।१०।।

लक्ष्मीरहल्या चन्नम्मा रुद्रमाम्बा सुविक्रमा ।
निवेदिता सारदा च प्रणम्या मातृदेवताः ।।११।।

श्रीरामो भरतः कृष्णो भीष्मो धर्मस्तथार्जुनः ।
मार्कण्डेयो हरिश्चन्द्रः प्रह्लादो नारदो ध्रुवः ।।१२।।

हनुमाञ्जनको व्यासो वशिष्ठश्च शुको बलिः ।
दधीचिः विश्वकर्माणौ पृथुवाल्मीकि भार्गवाः ।।१३।।

भगीरथश्चैकलव्यो मनुर्धन्वन्तरिस्तथा ।
शिबिश्च रन्तिदेवश्च पुराणोद्गीथकीर्तयः ।।१४।।

Scanned by CamScanner

बुद्धो जिनेन्द्रो गोरक्षः पाणिनिश्च पतंजलि ।
शंकरो मध्वनिम्बार्कौ श्रीरामानुजवल्लभौ ।।१५।।

झूलेलालोऽथ चैतन्यः तिरुवल्लुवरस्तथा ।
नायन्मारालवारश्च कंबश्च बसवेश्वरः ।।१६।।

देवलो रविदासश्च कबीरो गुरु नानकः ।
नरसिस्तुलसीदासो दशमेशो दृढव्रतः ।।१७।।

श्रीमत् शंकरदेवश्च बंधू सायण-माधवौ ।
ज्ञानेश्वरस्तुकारामो रामदासः पुरंदरः ।।१८।।

बिरसा सहजानन्दो रामानन्दस्तथा महान् ।
वितरन्तु सदैवैते दैवीं सद्‌गुण सम्पदम् ।।१९।।

भरतर्षिः कालिदासः श्रीभोजो जकणस्तथा ।
सूरदासस्त्यागराजो रसखानश्च सत्कवि ः ।।२०।।

रविवर्मा भातखंडे भाग्यचन्द्रः स भूपतिः ।
कलावन्तश्च विख्याताः स्मरणीया निरन्तरम् ।।२१।।

अगस्त्यः कंबु कौण्डिन्यौ राजेन्द्रश्चोलवंशजः ।
अशोकः पुष्यमित्रश्च खारवेलः सुनीतिमान् ।।२२।।

चाणक्यचन्द्रगुप्तौ च विक्रमः शालिवाहनः ।
समुद्रगुप्तः श्रीहर्षः शैलेन्द्रो बप्परावलः ।।२३।।

लाचिद् भास्करवर्मा च यशोधर्मा च हूणजित् ।
श्री कृष्णदेवरायश्च ललितादित्य उद्‌बलः ।।२४।।

मुसूनुरिनायकौ तौ प्रतापः शिवभूपतिः ।
रणजित्‌सिंह इत्येते वीरा विख्यात विक्रमाः ।।२५।।

वैज्ञानिकाश्च कपिलः कणादः सुश्रुतस्तथा ।
चरको भास्कराचार्यो वराहमिहिरः सुधीः ।।२६।।

नागार्जुनो भरद्वाज आर्यभट्टो बसुर्बुधः ।
ध्येयो वेंकटरामश्च विज्ञा रामानुजादयः ।।२७।।

रामकृष्णो दयानंदो रवीन्द्रो राममोहनः ।
रामतीर्थोऽरविंदश्च विवेकानन्द उद्यशाः ।।२८।।

दादाभाई गोपबन्धु तिलको गांधिरादृताः ।
रमणो मालवीयश्च श्री सुब्रह्मण्यभारती ।।२९।।

Scanned by CamScanner

सुभाषः प्रणवानन्दः क्रान्तिवीरो विनायकः ।
ठक्करो भीमरावश्च फुले नारायणो गुरूः ।।३०।।
संघशक्तिप्रणेतारौ केशवो माधवस्तथा ।
स्मरणीया सदैवैते नवचैतन्यदायकाः ।।३१।।
अनुक्ता ये भक्ताः प्रभुचरणसंसक्त हृदयाः ।
अविज्ञाता वीराः अधिसमरमुद्ध्वस्तरिपवः ।।३२।।
समाजोद्धर्तारः सुहित कर विज्ञान निपुणाः।
नमस्तेभ्यो भूयात् सकलजनेभ्यः प्रतिदिनम् ।।३३।।
इदमेकात्मता स्तोत्रं श्रद्धया यः सदा पठेत् ।
स राष्ट्रधर्मनिष्ठावान् अखण्डं भारतं स्मरेत् ।।३४।।

।। भारत माता की जय ।।

एकता मंत्र

यं वैदिका मन्त्रदृशः पुराणाः
इन्द्रं यमं मातरिश्वानमाहुः ।
वेदान्तिनोऽनिर्वचनीयमेकं
यं ब्रह्मशब्देन विनिर्दिशन्ति ।।
शैवा यमीशं शिव इत्यवोचन्
यं वैष्णवाः विष्णुरिति स्तुवन्ति ।
बुद्धस्तथाऽर्हन्निति बौद्धजैनाः
सत् श्री अकालेति च सिक्ख संतः ।।
शास्तेति केचित् कतिचित् कुमारः
स्वामीति मातेति पितेति भक्त्या ।
यं प्रार्थयन्ते जगदीशितारं
स एक एव प्रभुरद्वितीयः ।।

Scanned by CamScanner

प्रातः स्मरण

(सोमवार)

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ।।१।।

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।२।।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।३।।

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः
सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च ।
सप्तस्वराः सप्तरसातलानि
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।४।।

सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च
सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त ।
भूरादि कृत्वा भुवनानि सप्त
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।५।।

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः
स्पर्शी च वायुर्ज्वलनं च तेजः ।
नभः सशब्दं महता सहैव
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।६।।

प्रातः स्मरणमेतद्यो विदित्वाऽदरतः पठेत् ।
स सम्यग् धर्मनिष्ठः स्यात् संस्मृताखण्ड भारत ।।७।।

।। भारत माता की जय ।।

Scanned by CamScanner

।।श्री हनुमान चालीसा।।

(मंगलवार)

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि ।
बरनउ रघुबर बिमल जस, जो दायक फल चारि ।।

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल-बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार ।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।।
रामदूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि पुत्र पवन सुत नामा ।।
महावीर विक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुंडल कुंचित केसा ।।
हाथ बज्र अरु ध्वजा विराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।
संकर सुवन केसरी नन्दन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ।।
विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा।

Scanned by CamScanner

भीम रूप धरि असुर संघारे ।
रामचन्द्र के काज सँवारे।
लाय सजीवन लखन जियाये।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये।
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोविद कहि सकैं कहाँ ते ।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राजपद दीन्हा ।।
तुम्हरो मंत्र विभीषण माना ।
लंकेश्वर भये सब जग जाना ।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।।
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रक्षक काहू को डरना।

Scanned by CamScanner

आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक ते काँपै ।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महावीर जब नाम सुनावैं ।।
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ।।
संकट ते हनुमान छुड़ावैं ।
मन, क्रम वचन ध्यान जो लावैं ।।
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिनके काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोई अमित जीवन फल पावै ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु सन्त के तुम रखवारे ।
असुर निकन्दन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता ।
अस बर दीन्ह जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को भावैं ।
जनम-जनम के दुःख बिसरावैं ।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेई सर्व सुख करई ।।

Scanned by CamScanner

संकट कटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।
जय जय जय हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।।
जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महासुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्ध साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

।। सियावर रामचन्द्र की जय ।।

Scanned by CamScanner

वन्दना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

कर्पूरगौरं करुणावतारम्,
संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे,
भवं भवानी सहितं नमामि।।

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गम्,
सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापम्,
नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

लोकाभिरामं रणरंगधीरम् ,
राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरन्तम्,
श्री रामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगम्,
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यम्,
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।

Scanned by CamScanner

गुरु-महिमा

(गुरुवार)

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा ।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ।।
अमिय मूरिमय चूरन चारू ।
समन सकल भव रुज परिवारू ।।

सुकृति संभु तन विमल विभूती।
मंजलु मंगल मोद प्रसूती।।
जनमन मंजु मुकुर मल हरनी।
किए तिलक गुनगन बस करनी।।

श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती।
सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती।।
दलन मोह तम सो सप्रकासू।
बड़े भाग उर आवइ जासू।।

उघरहिं विमल विलोचन ही के।
मिटहिं दोष दुख भव रजनी के।।
सूझहिं राम चरित मनि मानिक।
गुपुत प्रकट जहँ जो जेहि खानिक।।

जथा सुअंजन अंजि दृग, साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखत सैल बन, भूतल भूरि निधान।।

Scanned by CamScanner

धर्म-रथ

(शुक्रवार)

दुहुँदिसि जय जयकार करि, निज-निज जोरी जानि।
भिरे बीर इत रामहिं, उत रावनहिं बखानि।।

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा।
देखि बिभीषन भयउ अधीरा।।
अधिक प्रीति मन भा संदेहा।
बंदि चरन कह सहित सनेहा।।

नाथ न रथ नहिं तन पदत्राना।
केहि बिधि जितब बीर बलवाना।।
सुनहु सखा कह कृपा निधाना।
जेहि जय होय सो स्यंदन आना।।

सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।
बल विवेक दम परहित घोरे।
छमा कृपा समता रजु जोरे।।

ईस भजनु सारथी सुजाना।
बिरति चर्म संतोष कृपाना।।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा।
बर विज्ञान कठिन कोदंडा।।

अमल अचल मन त्रोन समाना।
सम जम नियम सिलीमुख नाना।।
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा।
एहि सम बिजय उपाय न दूजा।।

सखा धर्ममय अस रथ जाके।
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके।।

महाअजय संसार रिपु, जीति सकइ सो बीर।
जाके अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मति धीर।।

Scanned by CamScanner

 (शनिवार)

ईशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्चजगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।(ईश०उप०१/१)

इस दृष्टिगत संसार में सभी कुछ ईश्वर का है। प्रत्येक वस्तु का त्याग पूर्वक भोग करना चाहिए। किसी के धन का लोभ नहीं करना चाहिए।

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।

आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत।। २-१४।।

हे कुन्तीनन्दन ! इन्द्रियों के जो विषय (जड़ पदार्थ) हैं, वे तो शीत (अनुकूलता) और उष्ण (प्रतिकूलता) के द्वारा सुख और दुःख देने वाले हैं। वे आने-जाने वाले और अनित्य हैं। हे भरतवंशोद्भव अर्जुन ! उनको तुम सहन करो।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ।।२-२२।।

जैसे मनुष्य पुराने कपड़ों को छोड़कर दूसरे नये कपड़े धारण कर लेता है, ऐसे ही देही अर्थात् जीवात्मा पुराने शरीरों को छोड़कर नये शरीर में चली जाती है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।२-२३।।

शस्त्र इस आत्मा को काट नहीं सकते, अग्नि इसको जला नहीं सकती, जल इसको गीला नहीं कर सकता और वायु इसको सुखा नहीं सकती।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

तस्माद परिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।२-२७।।

पैदा हुए की मृत्यु जरूर होगी और मरे हुए का जन्म जरूर होगा - इस जन्म मरण के प्रवाह का परिहार अर्थात् निवारण नहीं हो सकता। अतः इस विषय में तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए।

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ।

तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ।।२-३०।।

हे भरतवंशोद्भव अर्जुन ! सबके देह में स्थित यह देही सदा ही अवध्य है। इसलिए सम्पूर्ण प्राणियों के लिए अर्थात् किसी भी प्राणी के लिए तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥२-४७॥

कर्त्तव्य कर्म करने में ही तेरा अधिकार है, फलों में कभी नहीं । अतः कर्मफल का हेतु भी मत बन और तेरी अकर्मण्यता में भी आसक्ति न हो ।

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥२-४८॥

हे धनञ्जय ! तू आसक्ति का त्याग करके सिद्धि-असिद्धि में सम होकर योग में स्थित हुआ कर्मों को कर क्योंकि समत्व ही योग कहा जाता है।

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥२-६२॥

विषयों का चिन्तन करने वाले मनुष्य की उन विषयों में आसक्ति पैदा हो जाती है आसक्ति से कामना पैदा होती है। कामना से क्रोध पैदा होता है।

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृति विभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥२-६३॥

क्रोध होने पर सम्मोह (मूढ़भाव) हो जाता है। सम्मोह से स्मृति भ्रष्ट हो जाती है स्मृति भ्रष्ट होने पर बुद्धि का नाश हो जाता है। बुद्धि का नाश होने से मनुष्य का विनाश हो जाता है।

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युद्धयस्व विगतज्वरः ॥३-३०॥

मुझ अन्तर्यामी परमात्मा में लगे हुए चित्तद्वारा सम्पूर्ण कर्मों को मुझमें अर्पण करके आशारहित, ममतारहित और संतापरहित होकर युद्धकर ।

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥३-४२॥

Scanned by CamScanner

इन्द्रियों को स्थूल शरीर से परे श्रेष्ठ, प्रकाशक, व्यापक तथा सूक्ष्म कहते हैं। इन्द्रियों से परे मन है, मन से भी परे बुद्धि है और जो बुद्धि से परे है, वह आत्मा है अर्थात् सर्वोच्च अवस्था है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥४-७॥

हे भरतवंशी अर्जुन ! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब मैं अपने आपको साकार रूप में प्रकट करता हूँ।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भावामि युगे-युगे ॥४-८॥

साधुओं (भक्तों) की रक्षा करने के लिए, पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की भली-भाँति स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रगट होता हूँ।

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥४-१६॥

कर्म क्या है? और अकर्म क्या है? इस विषय में विद्वान् भी मोहित हो जाते हैं। अतः वह कर्म-तत्त्व मैं तुमसे भली-भाँति कहूँगा, जिसको जानकर तुम अशुभ (संसार बन्धन) से मुक्त हो जाओगे।

गतसंगस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः।
यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥४-२३॥

जिसकी आसक्ति सर्वथा मिट गयी है, जो मुक्त हो गया है, जिसकी बुद्धि स्वरूप के ज्ञान में स्थित है, ऐसे केवल यज्ञ के लिए कर्म करने वाले मनुष्य के सम्पूर्ण कर्म विलीन हो जाते हैं।

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥६-३०॥

जो सबमें मुझको देखता है और सबको मुझमें देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता हूँ और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता है।

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्म फलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥१२-१२॥

Scanned by CamScanner

अभ्यास से शास्त्र ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ और ध्यान से भी सब कर्मों के फल का त्याग श्रेष्ठ है। कर्मफल त्याग से तत्काल ही परमशान्ति प्राप्त हो जाती है।

देवद्विजगुरु प्राज्ञ पूजनं शौचमार्जवम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते॥ १७-१४॥

देवता, ब्राह्मण, गुरुजन और जीवन्मुक्त महापुरुष का पूजन करना, शुद्धि रखना, सरलता, ब्रह्मचर्य का पालन करना और हिंसा न करना- यह शरीर सम्बन्धी तप कहा जाता है।

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥ १७-१५॥

उद्वेग न रखने वाला, सत्य, प्रिय, हितकारक भाषण तथा स्वाध्याय और अभ्यास करना, यह वाणी सम्बन्धी तप कहा जाता है।

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रह :।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते॥ १७-१६॥

मन की प्रसन्नता , सौम्य भाव, मननशीलता, अन्तःकरण का निग्रह और भावों की शुद्धि इस तरह यह मन सम्बन्धी तप कहा जाता है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ १८-६६॥

सम्पूर्ण धर्मों का आश्रय छोड़कर तू केवल मेरी शरण में आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, चिन्ता मत कर।

Scanned by CamScanner

विद्यालय-प्रार्थना

अतुलित बल धामं हेम शैलाभदेहम्
दनुजवन कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकल गुण निधानं वानराणामधीशम्
रघुपति प्रिय भक्तं वातजातं नमामि ।।

या कुन्देन्दु तुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणा वरदण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्माऽच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।

X X X X

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।।
हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।।

X X X X

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव,
यद् भद्रं तन्न आसुव ।
ॐ असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माऽमृतं गमय ।
ॐ ऽऽऽ

Scanned by CamScanner

राष्ट्र-गीत

वन्दे मातरम्
सुजलां, सुफलां, मलयजशीतलाम् ।
शस्यश्यामलां, मातरम् वन्दे मातरम्।।
शुभ्र ज्योत्स्नां-पुलकित-यामिनीम् ।
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुर-भाषिणीम्
सुखदाम्, वरदां, मातरम् । वन्दे मातरम् ।।

भोजन-मंत्र

ॐ यन्तु नदयो वर्षन्तु पर्जन्याः । सुपिप्पला ओषधयो भवन्तु ।
अन्नवतामोदनवतामामिक्षवताम् । एषां राजा भूयासम् ।
ओदनमुद्ब्रुवते परमेष्ठी व एषः यदोदनः । परमामेवैनं श्रियं गमयति ।
मा भ्राता भ्रातरन् द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।।
ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैवतेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ।।

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै । तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।।

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

अर्थ- नदियाँ गतिमान हों (जल से परिपूर्ण होकर प्रवाहित हों), मेघ बरसें, औषधियाँ फलवती हों । तिनके से लेकर सोमवल्ली तक सभी वृक्ष-लतायें पुष्पित, पल्लवित तथा फलित हों धन-धान्यों वाले चावल एवं छेना (दूध, दही मक्खन, घी आदि पदार्थ) वाले लोगों के राष्ट्र का मैं राजा बनूँ। थाली में परोसा हुआ पका चावल 'भात' स्वयं श्रेष्ठ अन्नरूपी ब्रह्म (परमेश्वर) है। यह सेवन करने वाले को उच्चतम ऐश्वर्य सम्पदा रूपी लक्ष्मी को प्राप्त कराता है।

Scanned by CamScanner

भाई-भाई से द्वेष न करें। बहिन-बहिन से झगड़ा न करें सभी ठीक रीति से एकता का व्रत लेकर परस्पर कल्याण करने वाली वाणी (भाषा) बोलें।

यज्ञ में आहुति देने के उपादान भी ब्रह्म हैं, हवन करने का पदार्थ भी ब्रह्म रूपी अग्नि रूप होमकर्ता द्वारा जो हवन किया जाता है वह भी ब्रह्म है। अतः ब्रह्मरूप कर्म में समाधिस्थ पुरुष के द्वारा जो प्राप्त होने योग्य है, वह ब्रह्म ही है।

हम दोनों (गुरु और शिष्य गण) परस्पर सुरक्षा करें। हम मिलकर खायें (देश में कोई भूखा न रहे)। हम साथ-साथ मिलकर शौर्य प्रकट करें (राष्ट्र में कुचक्र आने पर युद्ध करें)। देश में संगठन रूपी तपश्चर्या उज्ज्वल एवं प्रदीप्त हो। हम अध्ययनशील हों। परस्पर द्वेष न करें। (तो राष्ट्र में) शान्ति बनी रहेगी, यह विचार सत्य है।

सर्वत्र शान्ति और सुव्यवस्था हो।

शान्ति पाठ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ग्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

Scanned by CamScanner